International Journal of Home Science 2022; 8(3): 245-246

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2028; 8(3): 245-246
© 2022 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 24-08-2022
Accepted: 30-09-2022

उर्वशी कोइराला
शोधार्थी एम० ए० नेट, ल० ना० मि० वि०, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ. दिव्या रानी हंसदा
शोध निर्देशिका, विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान संकाय, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
उर्वशी कोइराला
शोधार्थी एम० ए० नेट, ल० ना० मि० वि०, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

बदलती हुई पारिवारिक संरचना और बढ़ते वृद्धाश्रम

उर्वशी कोइराला, डॉ. दिव्या रानी हंसदा

सारांश
समाज को विकसित करने में परिवारों का बड़ा रोल होता है और इन परिवारों को विकसित करने में बुजुर्गों का अहम योगदान है। इसीलिए परिवार में बुजुर्गों की मौजूदगी बहुत जरूरी है। जैसा संयुक्त परिवारों में देखने को मिलता है। ऐसे परिवारों में बच्चों को आज भी अपने दादा दादी द्वारा संस्कार मिल रहे हैं जो उनके चरित्र निर्माण में बड़े सहायक साबित हो रहे हैं। इसका बड़ा फायदा ये भी है कि जब परिवार पर कोई भी बड़ी मुश्किल आती तो बड़े बुजुर्ग अपने सूझबूझ से परिवार को मुश्किल से बाहर निकालते हैं। संयुक्त परिवार प्रणाली अब धीरे धीरे लुप्त होती जा रही है या विलुप्त होने के कगार पर है। संयुक्त परिवार प्रणाली के टूटने के कारण सबसे मुश्किल में वृद्ध लोग हैं। पश्चिम में 'ओल्ड एज होम्स' एक आम बात है, लेकिन अब कुछ वर्षों से बदलती परिस्थितियों में 'ओल्ड एज होम' भारत में भी एक आवश्यकता बन गए है। संयुक्त परिवार के टूटने के सिलसिले के साथ ही वृद्धजनों की मुसीबतें भी बढ़ रही है। इससे उम्र के आखिरी पड़ाव पर वे अपमान का 'दर्द' भरा जीवन जीने को अभिशप्त हैं। माता पिता विपरीत हालातों में भी पाल पोस कर बड़ा करते हैं, उन्हीं बच्चों में अभिभावकों के प्रति दिल में जगह कम होती जा रही हैं। बीमार बुजुर्ग आखिरी समय वृद्धाआश्रम में काटने को मजबूर हैं। तरक्की के लिए युवाओं द्वारा आधुनिक जीवनशैली अपनाने के कारण संयुक्त परिवार तेजी से बिखर रहे हैं। इससे घर के बड़े बूढ़े हासिये पर ढकेले जा रहे हैं।

कूटशब्दः बदलती हुई पारिवारिक संरचना, बढ़ते वृद्धाश्रम, बुजुर्गों का अहम योगदान

प्रस्तावना
मनुष्य जिस तीव्र गति से उन्नति कर रहा है उसी गति से उसके संबंध पीछे छूटते जा रहे हैं। भौतिक सुख–सुविधाओं की बढ़ती इच्छाओं के कारण संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। माता–पिता बड़ी लगन से अपने बच्चों का पालन–पोषण करते हैं। उन्हें उच्च शिक्षा दिलाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। अगर परिवार में लड़कियाँ हैं तो वे विवाह के बाद ससुराल चली जाती हैं और लड़के नौकरी की खोज में बड़े शहरों में चले जाते हैं। इस प्रकार वृद्धावस्था में माता–पिता अकेले घर में रह जाते हैं। इस प्रकार शहरों में उनके बेटे भी अकेले हो जाते हैं। संयुक्त परिवार के टूटने के कारण एकल परिवार बढ़ते जा रहे हैं। एकल परिवारों के कारण संबंध टूट रहे हैं। आज बच्चों के लिए परिवार यानी माता–पिता और अन्य रिश्ते चाचा–चाची से ही खत्म हो जाते हैं। पहले एक परिवार में औसतन दस या बारह लोग सुखी जीवन व्यतीत करते थे। ऐसे में बच्चों को समझ, पहचान और रिश्तों के उचित सम्मान के संस्कारों से भर दिया जाता था और बचपन में लगाए गए संस्कारों के बीज जीवन भर एक ही भावना के साथ दिमाग में रहते थे। तब लोग संयुक्त परिवार को सबसे अच्छा मानते थे। लेकिन भौतिकवादी सोच के कारण मनुष्य आत्मकेंद्रित हो गया और धीरे धीरे समाज में एकल परिवार का विचार आकार लेने लगा।

बदलते समय के साथ बड़ों के प्रति सम्मान कम होता जा रहा है। नई पीढ़ी नई सोच के घोड़े पर सवार होकर शीघ्र ही आकाश को छूना चाहती है, फलस्वरूप वह अपनी सभ्य संस्कृति को भूल रही है। आज बड़ों को भी पुरानी चीज माना जाने लगा है और बच्चें बड़ों का सम्मान करना भूल रहे हैं। वास्तविकता यह है कि पिछले दो तीन दशकों में हमारी सामाजिक व्यवस्था और सोचने का तरीका बदल गया है। एकाकी परिवार की अवधारणा और विचार समाज में तेजी से विकसित हो रहा है और संयुक्त परिवार व्यवस्था समाप्त हो रही है।

बदलती सामाजिक और पारिवारिक व्यवस्था ने संयुक्त परिवारों में पैदा हुए बच्चों में बड़ों के प्रति सम्मान को भी कम कर दिया है क्योंकि बच्चे अब दादा–दादी और परदादा–दादी की कहानियाँ नहीं सुनना चाहते हैं। कार्टून, कंप्यूटर, विडिओ और मोबाइल गेम ही ऐसी चीजें हैं जो उन्हें लुभाती है। नतीजा बच्चे स्कूल से आने के बाद अपना ज्यादातर समय टीवी मोबाइल देखने में बिताते हैं। घर के सदस्यों के साथ उनकी बातचीत मामूली या काम से जुड़ी रहती है।

किसी भी रिश्ते के लिए समझ, प्यार और सम्मान तभी आता है जब कोई उस रिश्ते के साथ रहता है उठकर उससे बात करता है, लेकिन जब बच्चे बड़ों के साथ नहीं रहते हैं तो उन्हें बड़ों का सम्मान करने नहीं आता हैं। न प्यार करते हैं न ही बड़ों के लिए सम्मान जानते हैं।

बाल गंगाधर तिलक जी ने कहा था कि तुम्हें कब क्या करना है, यह बताना बुद्धि का काम है पर कैसे करना है यह अनुभव ही बता सकता है। बुजुर्ग शब्द दिमाग में आते ही उम्र व विचारों से परिपक्व व्यक्ति की छवि सामने आती है। बुजुर्ग अनुभवों का वह खजाना है जो हमें जीवन पथ के कठिन मोड़ पर उचित दिशा निर्देश करते हैं। बुजुर्ग घर का मुखिया होते हैं, इस कारण वह बच्चों को कोई गलत काम करते हुए देखते हैं तो वह सहन नहीं कर पाते हैं और उनके कार्यों में हस्तक्षेप करते हैं। जिसे बच्चे पसंद नहीं करते हैं, कई बार बच्चे बुजुर्गों की बातों को अनसुना कर देते हैं या उलटकर जवाब दे देते हैं। जिस बुजुर्ग ने अपनी परिवार रूपी बगिया के पौधों को अपने खून–पसीने रूपी खाद से सींचकर पल्लवित किया होता है। इस व्यवहार से उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुंचती है। एक समय था जब बुजुर्ग को परिवार पर बोझ नहीं बल्कि मार्गदर्शक समझा जाता था और बुजुर्गों की तुलना घर की छत से की जाती थी, जिसके आश्रय में परिवार के सभी सदस्य सुरक्षित महसूस करते थे, लेकिन आज वही छत सुरक्षा की तलाश में भटक रही है। एकल परिवार में अक्सर बूढ़े माता–पिता और दादा–दादी के लिए कोई जगह नहीं होती है। अगर उन्हें अपने बच्चों के साथ रहने को मिलता है तो उन्हें अवांछित बोझ समझा जाता है वे अपने आपको अपमानित अस्वीकृत और अलग–थलग महसूस करते हैं। राज्य मानव अधिकार आयोग के मुताबिक अपनो से सताए गए बुजुर्गों की शिकायतें लगातार बढ़ती जा रही है। उनकी समस्या बढ़ने के साथ ही वृद्धा आश्रमों की संख्या भी तेजी से बढ़ रही है, लगभग 22 प्रतिशत बुजुर्ग पारिवारिक विवाद के कारण घर छोड़ने को मजबूर हुए, 40 फीसदी स्वयं की इच्छा से और 12 प्रतिशत आर्थिक तंगी के कारण वहां पहुँचे, 40 प्रतिशत शारीरिक, मानसिक रूप से बीमार पाए गए। 'हेल्पेज इंडिया' की सर्वे रिपोर्ट में भी खुलासा हुआ है कि 31 प्रतिशत सताये जा रहे बुजुर्गों में 75 फीसदी परिवार के साथ रहते हैं, लेकिन परिवार की इज्जत रखने के लिए शिकायत नहीं करते हैं।

सारणी 1: परिवार के सदस्यों के द्वारा बुजुर्गों को उचित सम्मान दिया जाता है पारिवारिक संरचना के आधार पर

पारिवारिक संरचना	Opinion (अभिमत)			
	Yes (हाँ)		No (नहीं)	
	Number (संख्या)	Percentage (प्रतिशत)	Number (संख्या)	Percentage (प्रतिशत)
Joint (संयुक्त)	158	52.67	25	8.33
Nuclear (एकाकी)	62	20.67	55	18.33
Total (कुल)	220	73.34	80	26.66
Total (कुल) %	73.34 %		26.66 %	

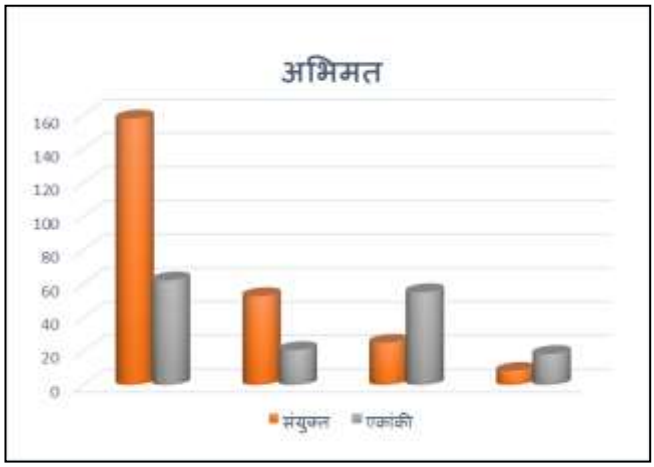

सारणी 1: परिवार के सदस्यों के द्वारा बुजुर्गों को उचित सम्मान दिया जाता है पारिवारिक संरचना के आधार पर

सारणी संख्या 1 से प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि अधिकतम 73.33 प्रतिशत परिवार ने उपरोक्त प्रश्न का उत्तर हॉ तथा न्यूनतम 26.67 प्रतिशत ने नहीं में उत्तर दिया है।

बुजुर्ग परिवार के रीढ़ होते हैं। ये एक पिल्लर की तरह होते हैं जो पूरे परिवार को एक साथ जोड़कर रखते हैं इन्हीं के कंधों पर घर की नींव टिकी होती है। हालांकि आज के नौजवानों की सोंच बदल गई है लेकिन एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए परिवारों में बुजुर्गों का होना बहुत जरूरी है।

यह भी ना भूले

चाहे कितनी भी व्यस्तता हो कम से कम सुबह और रात को सोने से पहले उनके साथ बातचीत के लिए 10–15 मिनट जरूर निकालें। लंच टाइम में अगर आप उनसे केवल इतना ही पूछ ले कि 'आपने खाना खाया या नहीं' ऐसी छोटी–छोटी बातों से भी उन्हें बहुत खुशी मिलती है। अपने बच्चों को शुरू से ही ग्रैंडपैरेंट्स का सम्मान करना सिखाएं।

"पेंड़ बूढ़ा ही सही, आँगन में लगा रहने दो,
फल न देगा न सही, छाँव तो देगा ही तुझको।"

निष्कर्ष

पारिवारिक संरचना में परिवर्तन तथा बदलते सामाजिक परिवेश में बुजुर्गों को बेकार और बेकार समझा जाने लगा है। माता–पिता और अभिभावकों के व्यस्त जीवन के शीर्ष पर बढ़ती संख्या में एकल परिवार बच्चों को बुजुर्गों से दूर ले जा रहे हैं। वास्तविकता यह है कि बड़ों के पास उनके लिए अनुभव का एक विशाल खजाना उपलब्ध है और यदि बच्चे बड़ों की छत्रछाया में अपना जीवन व्यतीत करते हैं, तो वे एक सुसंस्कृत संस्कृति की समझ के साथ–साथ अनगिनत गुणों और आदतों को सीखेंगे। यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम अपने बच्चों को अपने बड़ों का सम्मान करना सिखाएं और साथ ही उन्हें बताएं कि बुजुर्ग इस देश और उनके लिए कितने महत्वपूर्ण और मूल्यवान है।

संदर्भ

1. लाइफस्टाइल न्यूज डेस्क, 18 जुलाई 2022.
2. पंजाब केसरी समाचार पत्र, 18 जून 2020 "परिवार की शान और रौनक है बुजुर्ग".
3. जागरण समाचार पत्र, 13 सितंबर 2020.
4. राज्य मानवाधिकार रिपोर्ट 2020.
5. हेल्पेज इंडिया की सर्वे रिपोर्ट 2020.
6. allinone89.in 20 feb 2022A